

[2023] 7 एस. सी. आर. 366

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

क.

श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय और

ओआरएस।

वी.

डॉ. मनु और ए. एन. आर.

(2023 की सिविल अपील संख्या 3752)

16 मई, 2023

[के. एम. जोसेफ और बी. वी. नागरत्ना, जे. जे.]

सेवा कानून-प्रत्यर्थी संख्या 1 जुलाई 1999 में एक व्याख्याता के रूप में अपीलार्थी-विश्वविद्यालय की सेवा में शामिल हुए-उन्हें वरिष्ठ पैमाने पर रखा गया और यू. जी. सी. योजना dtd.21.12 के सी. एल. 6.16 के आधार पर उन्हें चार अग्रिम वेतनवृद्धि दी गई। 1999 जिसमें यह प्रावधान किया गया था कि जिन उम्मीदवारों के पास व्याख्याताओं के रूप में भर्ती के समय पी. एच. डी. की डिग्री थी, वे चार अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र होंगे-बाद में, प्रतिवादी संख्या 1 को चयन ग्रेड व्याख्याता के रूप में रखा गया था, हालांकि, वेतन तय करते समय, चयन ग्रेड व्याख्याता के रूप में पी. एच. डी. की डिग्री रखने वाले व्याख्याता की नियुक्ति पर देय दो अग्रिम वृद्धि, उपरोक्त यू. जी. सी. योजना के खंड 6,18 के अनुसार सरकारी आदेश (जी. ओ.) को देखते हुए प्रदान नहीं की गई थी। 29.03.2001 - दायर की गई रिट याचिका-अपीलार्थी को प्रतिवादी संख्या 1 का भुगतान करने का निर्देश दिया गया था, जो जी. ओ. dtd.21.12 की धारा 6,18 के संदर्भ में दो अग्रिम वृद्धि है। 1999 - आयोजित किया गया: एक व्याख्याता जिसके पास भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री थी, वह चयन ग्रेड में रखे जाने पर छह अग्रिम वेतन वृद्धि का हकदार था, जैसा कि जी. ओ. डी. टी. डी. के यू/सी. एल. 6.16 और 6.18 के तहत निर्धारित किया गया था। 21.12.1999 - ऐसे व्याख्याता को चयन श्रेणी में रखे जाने पर उपार्जित अग्रिम वेतन वृद्धि की संख्या को घटाकर चार कर दिया गया था। 29.03.2001 यह प्रावधान करते हुए कि एक शिक्षक जिसे भर्ती के समय पीएचडी डिग्री होने के कारण अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिला था, वह चयन ग्रेड में रखे जाने पर अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा-चयन ग्रेड में रखे जाने पर वेतन वृद्धि का लाभ उन व्याख्याताओं तक ही सीमित था जिन्होंने अपनी भर्ती के बाद पीएचडी डिग्री प्राप्त की थी-इस प्रकार, बाद के जी. ओ. डी. 29.03.2001 जी. ओ. dtd.21.12 को काफी हद तक संशोधित किया गया। 1999 और इसलिए, एक स्पष्टीकरण के रूप में घोषित नहीं किया जा सकता है और इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है-केवल इसलिए कि इसे एक स्पष्टीकरण/स्पष्टीकरण के रूप में वर्णित किया गया था, न्यायालय यह स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है कि उक्त आदेश केवल स्पष्टीकरणात्मक प्रकृति का है-वापस लिया गया लाभ के तहत प्रत्याशित नहीं था

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v.डॉ. मनु और ए. एन. आर.

पहले से मौजूद योजना-इसलिए, इस तरह के संशोधन को पूर्वव्यापी प्रभाव नहीं दिया जा सकता है-प्रतिवादी संख्या 1 जिसे जी. ओ. dt. 21.12 में निर्धारित सभी प्रोत्साहनों का हकदार 29.03.2001 से पहले चयन श्रेणी में रखा गया था। 1999 - एकल न्यायाधीश और खंड पीठ के निर्णयों ने पुष्टि की-कानूनों की व्याख्या।

कानूनों की व्याख्या-एक ठोस संशोधन की तुलना में स्पष्टीकरणात्मक/घोषणात्मक/व्याख्यात्मक प्रावधान-यदि पूर्वव्यापी-व्याख्या के सिद्धांत-चर्चा-सेवा कानून का संचालन।

आयकर आयुक्त, बॉम्बे बनाम पोद्दार सीमेंट

प्रा. लिमिटेड (1997) 226 आईटीआर 625 (एससी); एलाइड मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड।

ग

लिमिटेड बनाम। आयकर आयुक्त, दिल्ली (1997) 224 आईटीआर 677 (एससी); बिहटा सहकारी विकास गन्ना विपणन संघ लिमिटेड बनाम। बैंक ऑफ बिहार ए. आई. आर. 1967 एससी 389:[1967] एससीआर 848; वर्चुअल सॉफ्ट सिस्टम्स लिमिटेड बनाम। आयकर आयुक्त, दिल्ली (2007) 289 आईटीआर 83 (एससी); भारत संघ बनाम मार्टिन लॉटरी एजेंसियां लिमिटेड।

डी.

(2009) 12 एससीसी 209:[2009] 7 एस. सी. आर. 946-निर्भर।

पूर्व-बंदी। के. सी. अरोड़ा बनाम हरियाणा राज्य 1984 (3) एससीसी 281:[1984] 3 एस. सी. आर. 623; ज़िले सिंह बनाम हरियाणा राज्य

(2004) 8 एससीसी 1:[2004] 5 पूरक। एससीआर 272;

ई.

आयकर आयुक्त, अहमदाबाद बनाम सोने का सिक्का

हेल्थ फूड प्रा. लि. (2008) 9 एससीसी 622:[2008] 12

एस. सी. आर. 177; बिहार राज्य बनाम रमेश प्रसाद वर्मा

(मृत) एलआर (2017) 5 एससीसी 665 के माध्यम से:[2017] 2 एससीआर

342; एस. सुंदरम पिल्लई बनाम। वी. आर. पट्टाबिरमन ए. आई. आर.

1985 एससी 582:[1985] 2 एस. सी. आर. 643-संदर्भित। निर्णीत विधि संदर्भ

च

[1984] 3 एससीआर 623

संदर्भित किया गया है

पैरा 3.7

[2004] 5 पूरक।एस. सी. आर. 272 पैरा 4.7 [2008] 12 एस. सी. आर. 179 पैरा 4.7 [2017] 2 एस. सी. आर. 342 को संदर्भित करता है।

जी.

संदर्भित किया गया है

पैरा **4.7**

[1985] 2 एससीआर 643

संदर्भित किया गया है

पैरा **4.8**

[1967] एससीआर 848

पर भरोसा किया

पैरा **9.1**

एच.

[2009] 7 एससीआर 946

पर भरोसा किया

पैरा **9.1**

368

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

क.

सिविल अपील न्यायनिर्णय:2023 की सिविल अपील संख्या 3752।

2016 के डब्ल्यू. ए. सं. 254 में एर्नाकुलम में केरल उच्च न्यायालय के दिनांक 10.08.2016 के निर्णय और आदेश से।

पी. वी. सुरेंद्रनाथ, वरिष्ठ अधिवक्ता, बीजू पी. रमन, सावन कुमार शुक्ला, सुश्री लेखा सुधाकरन, अधिवक्ता।अपीलार्थियों के लिए।

राधेध बसंत, पी. वी. दिनेश, बिनेश के., सुश्री निदा के., सुश्री रूपाली लखोटिया, अजय कृष्णा, सी. के. सासी, अब्दुल्ला नसीह वी. टी., सुश्री मीना के. पौलोस, अधिवक्ता।उत्तरदाताओं के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

ग

नागरत्ना, जे.

अनुमति प्रदान की गई।

2. वर्तमान अपील अपीलार्थी-विश्वविद्यालय द्वारा 10 अगस्त, 2016 के अंतिम निर्णय और एर्नाकुलम में केरल उच्च न्यायालय द्वारा 2016 की रिट अपील संख्या 254 में पारित आदेश पर आक्षेप करते हुए दायर की गई है।विवादित निर्णय द्वारा, उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने अपीलार्थी-विश्वविद्यालय द्वारा दायर रिट अपील को खारिज कर दिया और उच्च न्यायालय के विद्वान

एकल न्यायाधीश, दिनांक 13 अक्टूबर, 2015 के फैसले की पुष्टि की, जिसमें अपीलार्थी-विश्वविद्यालय को संशोधित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ("यू. जी. सी.") योजना, 1998 के खंड 6,18 और 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के संदर्भ में प्रत्यर्थी संख्या 1 को चयन ग्रेड व्याख्याता के रूप में नियुक्त करने पर दो अग्रिम वेतनवृद्धि देने का निर्देश दिया गया था।

डी.

ई.

3. स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वर्तमान अपील को जन्म देने वाले तथ्य इस प्रकार हैं:

च

3.1. प्रत्यर्थी संख्या 1, अर्थात् Dr.Manu 14 जुलाई, 1999 को हिंदी भाषा विभाग में व्याख्याता के रूप में अपीलार्थी-विश्वविद्यालय की सेवा में शामिल हुए। उस समय, उन्होंने पहले 23 दिसंबर, 1988 और 13 जुलाई, 1999 के बीच की अवधि के लिए महात्मा गांधी सरकारी कला महाविद्यालय, माहे, पांडिचेरी में हिंदी के व्याख्याता के रूप में ग्यारह वर्षों से अधिक की सेवा प्रदान की थी।

जी.

3.2. 25 नवंबर, 2004 के एक आदेश द्वारा, प्रतिवादी संख्या 1 को 14 जुलाई, 1999 से वरिष्ठ पैमाने पर रखा गया था। इसके अलावा, उन्हें 21 दिसंबर, 1999 की यू. जी. सी. योजना के खंड 6,16 के आधार पर चार अग्रिम वेतनवृद्धि दी गई थी, जिसमें यह प्रावधान किया गया था कि जिन उम्मीदवारों ने ए.

एच.

369

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

व्याख्याता के रूप में भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री रखने वाले चार अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होंगे।

3.3. इसके बाद, 20 अक्टूबर, 2011 के एक आदेश द्वारा, प्रत्यर्थी संख्या 1 को 22 दिसंबर, 1999 के रूप में नियुक्ति की अनुमानित तिथि के साथ चयन ग्रेड व्याख्याता के रूप में रखा गया था और इसके परिणामस्वरूप, उनका वेतन 12 जनवरी, 2012 के आदेश द्वारा रु। 46,440-9000-55,440/-। वेतन तय करने में, 21 दिसंबर, 1999 की यू. जी. सी. योजना के खंड 6,18 के अनुसार, चयन ग्रेड व्याख्याता के रूप में पी. एच. डी. की डिग्री रखने वाले व्याख्याता की नियुक्ति पर देय दो अग्रिम वेतन वृद्धि प्रदान नहीं की गई थी।

3.4. प्रतिवादी नंबर 1 ने डब्ल्यू. पी. होने के नाते एक रिट याचिका दायर की। (ग) केरल उच्च न्यायालय के समक्ष 2012 की सं. 28567 ने 20 अक्टूबर, 2011 और 12 जनवरी, 2012 के अपीलार्थी-विश्वविद्यालय के आदेशों को इस आधार पर चुनौती दी कि चयन श्रेणी के व्याख्याता के रूप में नियुक्ति पर उन्हें देय दो अग्रिम वेतनवृद्धि को गलती से रोक दिया गया था। उक्त रिट याचिका में अन्य बातों के साथ-साथ जिन राहतों के लिए प्रार्थना की गई है, वे इस प्रकार हैं:

ग

डी.

i) 22 दिसंबर, 1999 से 14 जुलाई, 2000 तक नियुक्ति लाभों से इनकार करने की सीमा तक 12 जनवरी, 2012 के आदेश को रद्द करने वाले प्रमाण पत्र की प्रकृति में एक निर्देश जारी करना।

(ii) प्रत्यर्थी संख्या 1 को चयन श्रेणी में नियुक्त किए जाने के समय 22 दिसंबर, 1999 की यू. जी. सी. योजना के खंड 6,18 के अनुसार दो अग्रिम वेतनवृद्धि प्रदान करने के लिए अपीलार्थी-विश्वविद्यालय को आदेश देते हुए अनिवार्य रिट जारी करना और तदनुसार 22 दिसंबर, 1999 से उनके वेतन में संशोधन करना।

ई.

च

iii) 22 दिसंबर, 1999 से प्रत्यर्थी संख्या 1 को देय वेतन और बकाया का वितरण करने के लिए अपीलार्थी-विश्वविद्यालय को आदेश देते हुए अनिवार्य आदेश जारी करना, यानी जिस तारीख को उन्हें चयन श्रेणी में रखा गया था, वह तारीख 14 जुलाई, 2000 है।

3.5. अपीलार्थी-विश्वविद्यालय ने उक्त रिट याचिका में यह रुख अपनाते हुए एक जवाबी हलफनामा दायर किया कि प्रतिवादी संख्या 1 सरकारी आदेश, जी. ओ. के आलोक में चयन ग्रेड में अपनी नियुक्ति पर अपनी पी. एच. डी. डिग्री के आधार पर किसी भी आगे की वृद्धि का दावा करने के योग्य नहीं था। (पी) संख्या 44/2001/एच. एडन. दिनांक 29 मार्च, 2001 जिसमें स्पष्ट किया गया था कि जिन शिक्षकों को पहले ही पी. एच. डी. की डिग्री के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका है, वे उस समय अग्रिम वेतन वृद्धि के पात्र नहीं होंगे।

जी.

एच.

370

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

चयन श्रेणी में उनकी नियुक्ति। चूंकि उत्तरदाता संख्या 1 को पहले ही पी. एच. डी. की डिग्री रखने के आधार पर चार अग्रिम वेतनवृद्धि दी जा चुकी थी, इसलिए वह चयन श्रेणी में रखे जाने के समय अपनी पी. एच. डी. की डिग्री के आधार पर दो और अग्रिम वेतनवृद्धि का दावा करने का पात्र नहीं होगा।

3.6. उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश ने आंशिक रूप से डब्ल्यू. पी. (ग) 2012 का सं. 28567 और अपीलार्थी-विश्वविद्यालय को 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,18 के संदर्भ में प्रत्यर्थी सं. 2 को दो अग्रिम वृद्धि का भुगतान करने का निर्देश दिया। प्रतिवादी संख्या 1 द्वारा मांगी गई अन्य राहतों को उचित कार्यवाही में निर्णय लेने के लिए खुला छोड़ दिया गया था।

ग

3.7. प्रत्यर्थी संख्या 1 द्वारा दायर रिट याचिका को आंशिक रूप से अनुमति देने में उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश के निष्कर्ष और तर्क को निम्नानुसार समाहित किया गया है:

i) कि 20 अक्टूबर, 2011 और 12 जनवरी, 2012 के अपीलार्थी-विश्वविद्यालय के आदेशों की वैधता पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। यह कि एकमात्र प्रश्न जिस पर विचार करने की आवश्यकता होगी, वह उत्तरदाता संख्या 1 से दो अग्रिम वेतनवृद्धि की पात्रता के बारे में है, जिसे केवल इस तथ्य के कारण अस्वीकार कर दिया गया था कि बाद में एक सरकारी आदेश पारित किया गया था जिसमें यह निर्धारित किया गया था कि जिन शिक्षकों को पहले से ही पीएचडी डिग्री रखने के लिए अग्रिम वेतनवृद्धि का लाभ मिल गया था, वे चयन ग्रेड में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतनवृद्धि के लिए पात्र नहीं होंगे।

डी.

ई.

ii) कि 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश ने 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश को इस हद तक संशोधित किया था कि जिन शिक्षकों को पहले ही पी. एच. डी. की डिग्री के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका था, वे चयन ग्रेड में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होंगे। कि एक संशोधन को पूर्वव्यापी प्रभाव के लिए नहीं कहा जा सकता है जब तक कि यह स्पष्ट रूप से प्रदान नहीं किया जाता है कि यह पूर्व-कैप्ट के अनुसार पूर्वव्यापी रूप से काम करेगा। के. सी. अरोड़ा

च

जी.

बनाम। हरियाणा राज्य, 1984 (3) एससीसी 281 (के. सी. अरोड़ा)।

यह कि 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश के अवलोकन से यह संकेत नहीं मिलता है कि यह पूर्वव्यापी रूप से काम करने के लिए था।

एच.

371

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

क.

iii) कि चूंकि प्रत्यर्थी संख्या 1 को 22 दिसंबर, 1999 से, अर्थात् 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश के पारित होने से पहले, चयन श्रेणी में रखा गया था, इसलिए वह 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,18 के लाभ का हकदार होगा।

3.8. अपीलार्थी-विश्वविद्यालय ने उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश द्वारा पारित निर्णय को उच्च न्यायालय की खंड पीठ के समक्ष 2016 की डब्ल्यू. ए. संख्या 254 के रूप में एक रिट अपील दायर करके चुनौती दी।

3.9.10 अगस्त, 2016 के विवादित फैसले द्वारा केरल उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने अपीलार्थी-विश्वविद्यालय द्वारा दायर उक्त रिट अपील को खारिज कर दिया और उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश के 13 अक्टूबर, 2015 के फैसले की पुष्टि की, जिसमें अपीलार्थी-विश्वविद्यालय को 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,18 के संदर्भ में प्रतिवादी संख्या 1 को दो अग्रिम वेतनवृद्धि देने का निर्देश दिया गया था।

ग

डी.

10 अगस्त, 2016 के विवादित फैसले में उच्च न्यायालय की खंड पीठ के प्रासंगिक निष्कर्षों को निम्नानुसार निकाला गया है:

i) यह स्वीकार किया जा सकता है कि सरकार ने 29 मार्च, 2001 के आदेश के माध्यम से 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश में संशोधन किया था, जिसमें चयन श्रेणी में रखे जाने पर अग्रिम वेतन वृद्धि प्रदान करने की पात्रता के लिए कुछ शर्तों को निर्दिष्ट किया गया था। केवल इसलिए कि 29 मार्च, 2001 का आदेश पारित किया गया था, जब यह स्पष्टीकरण मांगा गया था कि जिन शिक्षकों को पहले ही पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त करने के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका है, वे चयन श्रेणी में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होंगे या नहीं, उक्त आदेश को स्पष्टीकरणात्मक आदेश नहीं कहा जा सकता है और इसे पूर्वव्यापी रूप से प्रभावी बनाया जा सकता है।

ई.

च

ii) रिलायंस को 2013 की रिट अपील (सी) No.749 में उच्च न्यायालय की एक समन्वित पीठ के निर्णय पर रखा गया था, जिसमें सरकार का यह तर्क था कि एक व्याख्याता जिसे उसकी भर्ती के समय पहले ही अग्रिम वेतन वृद्धि दी जा चुकी थी, वह 29 मार्च, 2001 के आदेश के आलोक में चयन श्रेणी में जाने पर आगे की वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

जी.

एच.

372

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

iii) कि 29 मार्च, 2001 का सरकारी आदेश प्रत्यर्थी संख्या 1 पर लागू नहीं किया जा सका, जिसे 14 जुलाई, 2000 से प्राप्त वास्तविक लाभों के साथ 22 दिसंबर, 1999 से वैचारिक रूप से चयन श्रेणी में रखा गया था। उक्त निर्णय से व्यथित, वर्तमान अपील अपीलार्थी-विश्वविद्यालय द्वारा दायर की गई है।

प्रस्तुतियाँ:

4. हमने अपीलार्थी-विश्वविद्यालय के लिए विद्वान वरिष्ठ वकील श्री पी. वी. सुरेंद्रनाथ और प्रत्यर्थी संख्या 1 के लिए विद्वान वकील श्री रागेंथ बसंत को सुना है और अभिलेख पर सामग्री का अध्ययन किया है।

ग

4.1. आरंभ में अपीलार्थी-विश्वविद्यालय की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री पी. वी. सुरेंद्रनाथ ने प्रस्तुत किया कि केरल उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश और खंड पीठ के क्रमशः 13 अक्टूबर, 2015 और 10 अगस्त, 2016 के निर्णय मामले के कानून और तथ्यों की गलत सराहना पर आधारित थे और इसलिए, इस न्यायालय द्वारा खारिज किए जाने के योग्य हैं।

डी.

4.2. यह भी तर्क दिया गया कि 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6.16 से 6.19 को बारीकी से पढ़ने से यह संकेत मिलता है कि पी. एच. डी. की डिग्री रखने वाले शिक्षक द्वारा प्राप्त की जाने वाली अग्रिम वेतन वृद्धि की अधिकतम संख्या सभी परिस्थितियों में चार तक सीमित है। इसका मतलब यह है कि एक शिक्षक जिसके पास व्याख्याता के रूप में भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री थी और इसलिए उसे चार अग्रिम वेतन वृद्धि दी गई थी, वह चयन ग्रेड में रखे जाने पर पीएचडी डिग्री के आधार पर अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

ई.

च

4.3. उक्त सरकारी आदेश के खंड 6.16 से 6.19 के पाठ का उल्लेख करते हुए, यह तर्क दिया गया कि उक्त प्रावधान पीएचडी योग्यता के आधार पर दोहरे लाभ पर विचार नहीं करते हैं। कि प्रावधान भर्ती के समय और चयन श्रेणी में रखे जाने के समय भी पी. एच. डी. योग्यता के आधार पर अग्रिम वृद्धि का लाभ प्रदान करने का प्रयास नहीं करते हैं। पी. एच. डी. योग्यता रखने के आधार पर भर्ती के समय अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ उठाने के बाद, एक व्याख्याता एक बार फिर चयन ग्रेड में रखे जाने के समय अपनी पी. एच. डी. योग्यता के आधार पर वेतन वृद्धि का दावा नहीं कर सकता है।

जी.

एच.

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v.डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

क.

4.4.यह तर्क दिया गया था कि 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश में स्पष्ट किया गया था कि जिन शिक्षकों को पहले ही पी. एच. डी. योग्यता रखने के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका है, वे चयन श्रेणी में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होंगे। कि 29 मार्च, 2001 का सरकारी आदेश एक स्पष्टीकरणात्मक आदेश था और ऐसा आदेश नहीं था जो किसी भी मूल अधिकार को निहित या वापस ले। कि 29 मार्च, 2001 का सरकारी आदेश स्पष्ट रूप से दर्ज करता है कि यह पी. एच. डी. रखने/प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए प्रोत्साहन के संबंध में मांगे गए स्पष्टीकरण के अनुसार जारी किया जा रहा था। योग्यताएँ। इसलिए, उक्त स्पष्टीकरण उस तारीख से संबंधित होगा जिस दिन 21 दिसंबर, 1999 का पिछला सरकारी आदेश लागू हुआ था।

ग

4.5.यह भी तर्क दिया गया कि 29 मार्च, 2001 का स्पष्टीकरण आदेश केवल 21 दिसंबर, 1999 के पूर्ववर्ती सरकारी आदेश के कार्यान्वयन में अस्पष्टताओं को दूर करने के उद्देश्य से जारी किया गया था। इसलिए, इसे 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के एक हिस्से के रूप में पढ़ा जाना चाहिए और इसे एक अलग आदेश के रूप में नहीं माना जाना चाहिए जो 21 दिसंबर, 1999 के आदेश के माध्यम से प्रदत्त अधिकारों को संशोधित या परिवर्तित करने का प्रयास करता है।

डी.

4.6.यह प्रस्तुत किया गया था कि जब कोई आदेश स्वयं बिना किसी अस्पष्ट शब्दों में दर्ज करता है कि इसे पिछले आदेश के स्पष्टीकरण के रूप में जारी किया गया है, तो इसे स्पष्टीकरण के रूप में माना जाना चाहिए न कि संशोधन/संशोधन के रूप में। तदनुसार, इस तरह के आदेश को उस तारीख से पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जाना चाहिए जिस दिन स्पष्ट किए जाने का आदेश लागू हुआ था।

ई.

4.7.इसके बाद यह तर्क दिया गया कि चूंकि 29 मार्च, 2001 के आदेश में विशेष रूप से कहा गया था कि यह एक स्पष्टीकरणात्मक आदेश था, इसलिए यह स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करने की आवश्यकता नहीं थी कि उक्त आदेश पूर्वव्यापी रूप से काम करेगा। इसलिए, विद्वान एकल न्यायाधीश ने एक निष्कर्ष दर्ज करने में गलती की थी कि चूंकि 29 मार्च, 2001 के आदेश में विशेष रूप से यह नहीं कहा गया था कि यह पूर्वव्यापी रूप से काम करेगा, इसलिए इसे पूर्वव्यापी संचालन नहीं माना जा सकता था।

च

जी.

इस तर्क को पुष्ट करने के लिए, श्री सुरेंद्रनाथ ने जिले सिंह बनाम हरियाणा राज्य मामले में इस न्यायालय के फैसलों पर भरोसा किया है।

(2004) 8 एस. सी. सी. 1; आयकर आयुक्त, अहमदाबाद बनाम गोल्ड कॉइन हेल्थ फूड प्रा. लिमिटेड, **(2008) 9 एस. सी. सी. 622** और बिहार राज्य बनाम रमेश प्रसाद वर्मा **(मृत) एल. आर. के माध्यम से, (2017) 5 एस. सी. सी. 665**

एच.

374

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

(रमेश प्रसाद वर्मा) एक क़ानून में स्पष्टीकरणात्मक संशोधन के पूर्वव्यापी आवेदन के संबंध में।

4.8.रिलायंस को इस अदालत के फैसले पर रखा गया था

S.Sundaram पिछई बनाम। वी. आर. पट्टाबिरमन, ए. आई. आर. **1985 एस. सी. 582**

जिसमें इस न्यायालय ने कहा कि एक सांविधिक प्रावधान में जोड़ा गया स्पष्टीकरण एक मूल प्रावधान नहीं है, बल्कि जैसा कि शब्द का सादा अर्थ ही बताता है, यह केवल कुछ अस्पष्टताओं को समझाने या स्पष्ट करने के लिए है जो सांविधिक प्रावधान की व्याख्या करने में आ सकती हैं। इस संदर्भ में, यह तर्क दिया गया कि 29 मार्च, 2001 के आदेश के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाएगा कि इसका उद्देश्य 21 दिसंबर, 1999 के आदेश के खंड 6.16 से 6.19 के आवेदन में अस्पष्टता को स्पष्ट करना था और किसी भी मूल अधिकार को वापस नहीं लेना था। इसलिए, उक्त स्पष्टीकरण को पूर्वव्यापी रूप से संचालित करने की अनुमति देने के लिए कोई रोक नहीं होगी।

ग

उपरोक्त दलीलों के साथ, यह प्रार्थना की गई कि वर्तमान अपील को अनुमति दी जाए और केरल उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश और खंड पीठ के क्रमशः 13 अक्टूबर, 2015 और 10 अगस्त, 2016 के निर्णयों को रद्द कर दिया जाए।

डी.

5. इसके विपरीत, प्रत्यर्थी संख्या 1 की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ वकील, श्री राघेथ बसंत ने प्रस्तुत किया कि उच्च न्यायालय का विवादित निर्णय वर्तमान मामले के कानून और तथ्यों की एक निर्विवाद समझ पर आधारित है और इसलिए, इस न्यायालय द्वारा हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।

ई.

5.1. यह आगे प्रस्तुत किया गया कि खंड 6,16,6,18 और 6,19 के संयुक्त पठन से पता चलेगा कि व्याख्याता के रूप में भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री रखने वाला व्याख्याता छह अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा, यानी भर्ती के समय चार अग्रिम वेतन वृद्धि और चयन श्रेणी में रखे जाने के समय दो अतिरिक्त वेतन वृद्धि। इसके अलावा, एक व्याख्याता जिसके पास अपनी भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री नहीं है, लेकिन बाद में चयन ग्रेड में नियुक्ति से पहले व्याख्याता के रूप में सेवा करते हुए एक प्राप्त करता है, वह चार अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा, यानी, पीएचडी प्राप्त करने पर दो अग्रिम वेतन वृद्धि और चयन ग्रेड में रखे जाने पर दो और वेतन वृद्धि।

च

जी.

5.2. यह आगे प्रस्तुत किया गया कि केवल इसलिए कि भर्ती के समय दी गई वेतन वृद्धि के साथ-साथ चयन श्रेणी में नियुक्ति के समय जो लाभ उठाया जा सकता था, वे सभी ए पर आधारित थे।

एच.

375

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

पी. एच. डी. योग्यता, वेतनवृद्धि की पूर्व किशत बाद वाले को बाहर करने के लिए नहीं दी जानी थी। यद्यपि पी. एच. डी. योग्यता के आधार पर प्रदान किया जाता है, लेकिन वेतनवृद्धि को व्याख्याता के कार्यकाल के विभिन्न चरणों में प्रभावी बनाया गया था। इसलिए, खंड 6,16,6,18 और 6,19 का यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता है कि एक व्याख्याता जिसे भर्ती के समय पहले ही

चार अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका था, वह चयन श्रेणी में रखे जाने पर दो और अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा।

5.3. यह तर्क दिया गया कि खंड 6,16,6,18 और 6,19 को पढ़ने से यह नहीं पता चलता है कि एक व्याख्याता जिसे भर्ती के समय पहले ही चार अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका है, वह चयन श्रेणी में रखे जाने पर दो और अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होगा। इसलिए, 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश, जिसने खंड 6,16,6,18 और 6,19 के अर्थ को महत्वपूर्ण रूप से संशोधित/संशोधित किया, को स्पष्टीकरण नहीं कहा जा सका और इसलिए इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू किया गया।

ग

डी.

5.4. के. सी. अरोड़ा में इस न्यायालय के निर्णय पर यह तर्क देने के लिए भरोसा रखा गया था कि किसी संशोधन को पूर्वव्यापी प्रभाव वाला नहीं कहा जा सकता है जब तक कि यह स्पष्ट रूप से प्रदान नहीं किया जाता है कि यह पूर्वव्यापी रूप से (या आवश्यक निहितार्थ से) काम करेगा। यह कि 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश ने यह संकेत नहीं दिया कि इसे पूर्वव्यापी रूप से संचालित किया जाना था और इसलिए इसका पूर्वव्यापी प्रभाव नहीं कहा जा सकता है। 5.5. यह प्रस्तुत किया गया कि उच्च न्यायालय ने उचित ही अभिनिर्धारित किया कि केवल इसलिए कि 29 मार्च, 2001 का आदेश पारित किया गया था जब यह स्पष्टीकरण मांगा गया था कि क्या जिन शिक्षकों को पहले ही पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त करने के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका है, वे चयन श्रेणी में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होंगे, उक्त आदेश को स्पष्टीकरणात्मक आदेश नहीं कहा जा सकता है और इसे पूर्वव्यापी रूप से प्रभावी बनाया जा सकता है। यदि 29 मार्च, 2001 के आदेश को पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जाता है, तो इसका प्रभाव प्रतिवादी संख्या 1 जैसे व्याख्याताओं के निहित अधिकारों को वापस लेने का होगा और इसलिए यह कानून के तय किए गए सिद्धांतों का उल्लंघन होगा कि एक संशोधन को पूर्वव्यापी रूप से लागू नहीं किया जा सकता है, यदि इस तरह के आवेदन का निहित अधिकारों को रद्द करने का प्रभाव होगा।

ई.

च

जी.

उपरोक्त प्रस्तुतियों के साथ, यह प्रार्थना की गई कि वर्तमान अपील को योग्यता से रहित होने के कारण खारिज कर दिया जाए और केरल उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश और खंड पीठ के क्रमशः 13 अक्टूबर, 2015 और 10 अगस्त, 2016 के निर्णयों की पुष्टि की जाए।

एच.

376 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 7 एस. सी. आर.

विचार के लिए बिंदु:

6. संबंधित पक्षों के लिए विद्वान वरिष्ठ वकील और विद्वान वकील को सुनने के बाद और रिकॉर्ड पर सामग्री के अवलोकन पर, हम पाते हैं कि निम्नलिखित बिंदु हमारे विचार के लिए उत्पन्न होंगे:

i) क्या उच्च न्यायालय ने 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,18 के संदर्भ में प्रत्यर्थी संख्या 1 को चयन ग्रेड व्याख्याता के रूप में उनकी नियुक्ति पर दो अग्रिम वेतनवृद्धि देने का निर्देश देना सही और उचित था?

ग

(ख) कौन-सा आदेश?

चर्चा और विश्लेषण:

7. यह मामला इस बात का निर्धारण करने की मांग करता है कि क्या 29 मार्च, 2001 दिनांक 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6.16 से 6.19 का स्पष्टीकरण था या क्या उसने इसमें संशोधन या संशोधन किया था। यदि बाद के सरकारी आदेश को पहले के आदेश के स्पष्टीकरण की प्रकृति में घोषित किया जाता है, तो इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है। इसके विपरीत, यदि बाद के सरकारी आदेश को पहले के आदेश का संशोधन/संशोधन माना जाता है, तो इसका आवेदन संभावित होगा क्योंकि इसके पूर्वव्यापी आवेदन के परिणामस्वरूप निहित अधिकारों को वापस लिया जाएगा जो कानून में अस्वीकार्य है और इसके लिए वसूली भी की जा सकती है।

डी.

ई.

7.1. तैयार संदर्भ के लिए, संख्या जी. ओ. वाले सरकारी आदेश के प्रासंगिक खंड। (पी) सं. 171/99 एच. एडन. दिनांक 21 दिसंबर, 1999 को नीचे निकाला गया है:

च

“ Ph.D./M.Phil के लिए प्रोत्साहन।

6.16. पी. एच. डी. और एम. फिल. रखने वालों के लिए चार और दो अग्रिम वेतन वृद्धि स्वीकार्य होगी। व्याख्याताओं के रूप में भर्ती के समय क्रमशः डिग्री। D.Litt वाले उम्मीदवार।/डी. एस. सी. को पी. एच. डी. और M.Litt के बराबर लाभ दिया जाना चाहिए। M.Phil के बराबर।

जी.

6.17. उन शिक्षकों के लिए एक वेतन वृद्धि स्वीकार्य होगी जिनके पास M.Phil है। जो भर्ती के दो साल के भीतर पी. एच. डी. प्राप्त करते हैं।

एच.

377

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

क.

6.18. पी. एच. डी. के साथ एक व्याख्याता दो अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र होगा जब वह चयन ग्रेड/रीडर में जाता है। 6.19. एक शिक्षक अपने सेवा जीवन में पीएचडी की डिग्री प्राप्त करने पर दो अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा।”

7.2.21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के उपरोक्त खंडों को एक साथ पढ़ने पर निम्नलिखित पहलू सामने आएंगे:

i) एक व्याख्याता, जिसके पास भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री है, वह चार वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा। ऐसे उम्मीदवार को चयन श्रेणी में या रीडर के रूप में रखे जाने पर दो अतिरिक्त अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा। इसलिए, एक व्याख्याता के रूप में भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री के साथ एक व्याख्याता और बाद में चयन ग्रेड में रखा जाता है, कुल छह अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र होगा।

ग

डी.

(ii) एक व्याख्याता, जिसके पास एक M.Phil हो। भर्ती के समय डिग्री, दो वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगी। यदि ऐसा व्याख्याता भर्ती के दो साल के भीतर पीएचडी की डिग्री प्राप्त करता है, तो वह एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा। चयन श्रेणी में रखे जाने पर ऐसा व्याख्याता दो अतिरिक्त अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा। इसलिए, एक व्याख्याता जिसके पास एक

M.Phil था।भर्ती के समय डिग्री, लेकिन बाद में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की और चयन ग्रेड में रखा जाता है, कुल पांच अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र होगा।

ई.
च

iii) एक ऐसा व्याख्याता जिसके पास न तो M.Phil था।भर्ती के समय न तो डिग्री और न ही पीएचडी की डिग्री, लेकिन अपने करियर के दौरान पीएचडी की डिग्री प्राप्त करता है, पीएचडी प्राप्त करने पर दो अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र होगा।इसके अलावा, चयन श्रेणी में रखे जाने पर, ऐसा व्याख्याता दो अतिरिक्त अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा।इसलिए, एक व्याख्याता जिसके पास न तो M.Phil था।भर्ती के समय न तो डिग्री और न ही पीएचडी की डिग्री, लेकिन अपने करियर के दौरान पीएचडी की डिग्री प्राप्त करता है और चयन ग्रेड में रखा जाता है, कुल चार अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र होगा।

जी.
एच.

378

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट
[2023] 7 एस सी आर।

21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के तहत परिभाषित व्याख्याताओं की विभिन्न श्रेणियों के अधिकारों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है:

ग
डी.
ई.

7.3.21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के उपरोक्त खंडों के महत्व पर चर्चा करने के बाद, यह जांच करना आवश्यक है कि 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश के माध्यम से इसे किस हद तक संशोधित किया गया था। (पी) सं. 44/2001 एच. एडन. जो नीचे लिखा है:

च
“केरल प्राधिकरण की सरकार
जी.

विश्वविद्यालय और महाविद्यालय-यू. जी. सी. योजना-भुगतान मानकों में संशोधन-स्पष्टीकरण-संशोधित-आदेश जारी किए गए।
उच्च शिक्षा (सी) विभाग ए

एच.

379

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v.डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

जी. ओ. (पी) No.44/2001/H.Edn।

तारीख:29.03.2001.

पढ़िए:1. जी. ओ. (पी) No.171/99/H.Edn. दिनांक 21.12.1999।2. जी. ओ. (पी) No.110/2000/H.Edn. दिनांक 04.07.2000 3.पत्र Nos.GE/10/390/2316 दिनांकित 14.08.2000 4।जी. ई. 10/ई/जनरल/486/2097 दिनांक 21.09.2000

5. महालेखाकार, तिरुवनंतपुरम से जीई-10/ई/जनरल/518/3493 दिनांक 24.10.2000।

ग

6. सरकार. LetterNo.24292/C3/2000/H.Edn. dt.13.10.2000.आदेश

तिरुवनंतपुरम के महालेखाकार ने ऊपर पढ़े गए अपने पत्रों में सरकार को सूचित किया कि चूंकि दूसरे आई. आर. को काल्पनिक रूप से निर्धारण के लिए माना जाता है, इसलिए 1-1-96 से 31-1-97 तक की गणना के लिए अकेले पहले अंतरिम राहत की गणना आवश्यक है और इसलिए उन्होंने केवल पहली अंतरिम राहत लेने के लिए एक तैयार गणनाकर्ता तैयार किया है और मंजूरी के लिए सरकार को भेजा है। उन्होंने यह भी बताया कि जी. ओ. में वेतन के पूर्व-संशोधित पैमाने Rs.3700-5700 के लिए गणनाकर्ता में एक त्रुटि हुई है जिसे ऊपर दूसरे पेपर के रूप में पढ़ा गया है। उन्होंने सी. एल. में निर्धारित Ph.D/M.Phil के लिए प्रोत्साहन में कुछ स्पष्टीकरण भी मांगे हैं। जी. ओ. में 6.16 से 6.19 को ऊपर दिए गए पहले पेपर के रूप में पढ़ा जाता है। सरकार ने मामले की विस्तार से जांच की है और निम्नलिखित आदेश देने के लिए प्रसन्न है:

डी.

ई.

1. लेखाकार, तिरुवनंतपुरम द्वारा अपने ऊपर पढ़े गए पत्र के साथ, 1-1-96 से 31-1-97 तक वेतन के बकाया की गणना करने के लिए, केवल पहली अंतरिम राहत की गणना करने के लिए तैयार लेखा परीक्षक को सरकार द्वारा अनुमोदित किया जाता है और इस आदेश के साथ जोड़ा जाता है।

च

2. 10 वें चरण में पूर्व-संशोधित पैमाने Rs.3700-5700 यानी Rs.4825 से वेतन प्राप्त करने वाले शिक्षकों को उनकी वेतन वृद्धि एक वर्ष के बाद मिलेगी, न कि उनकी वेतन वृद्धि की सामान्य तिथियों पर।

जी.

3. सेवा में प्रवेश के समय M.Phil और Ph. D. दोनों रखने वाले शिक्षक 4 अग्रिम वेतन वृद्धि के हकदार हैं।

एच.

380

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

4. सरकारी आदेश दिनांक 21.12.99 के पैरा 6.16 से 6.18 में निर्दिष्ट प्रोत्साहन एक साथ पात्र नहीं हैं।

5. जिन शिक्षकों को पी. एच. डी. करने के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिला है, वे चयन ग्रेड में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र नहीं होंगे। लेकिन जिन शिक्षकों को बाद में पीएचडी मिली थी और जिन्हें पहले लाभ नहीं मिला था, वे चयन ग्रेड रीडर में जाने पर 2 अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होंगे। इस लाभ के प्रभाव की तारीख 1.1.96 से होगी। जिन लोगों ने 1.1.96 पर या उसके बाद Ph. D. प्राप्त किया है/प्राप्त करेंगे, वे Ph. D. डिग्री प्रदान करने की तारीख से अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र हो जाएंगे। प्रतिनियुक्ति पर पी. एच. डी. के लिए खर्च की गई अवधि को वरिष्ठ स्तर/चयन ग्रेड में नियुक्ति के लिए योग्यता सेवा के रूप में भी माना जाएगा। उच्च स्तर पर वेतन तय करने के लिए निम्न स्तर पर अग्रिम वेतन वृद्धि को मंजूरी दी जाएगी।

ग

6. एक शिक्षक एक साथ प्रोत्साहन के लिए पात्र नहीं है जैसा कि पैरा 6,18 और 6,19 में कहा गया है।

डी.

7. एक शिक्षक पैरा 6,17 और 5,19 (6,19 के रूप में पढ़ा जाना चाहिए) दोनों में एक साथ निर्दिष्ट लाभों के लिए पात्र नहीं है।

8. जिन शिक्षकों को अग्रिम वेतन वृद्धि मिलती है, वे नियम 28-ए भाग I K.S.Rs के अनुसार निर्धारण के लिए पात्र नहीं होंगे।

ई.

9. सरकारी आदेशों को पहले और दूसरे पेपर के रूप में पढ़ा जाता है और इस हद तक संशोधित किया जाता है।

राज्यपाल के आदेश से

च

ह /-

एन. चंद्रशेखरन नायर,

प्रधान सचिव

(उच्च शिक्षा) "

जी.

(हमारे द्वारा रेखांकित)

7.4.29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश का अध्ययन करने पर निम्नलिखित पहलू सामने आते हैं:

i) कि उक्त आदेश महालेखाकार, तिरुवनंतपुरम, ए द्वारा मांगे गए स्पष्टीकरण के अनुसार जारी किया गया था।

एच.

381

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v.डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,16 से 6,19 के तहत प्रोत्साहन के संबंध में।

ii) 29 मार्च, 2001 के आदेश के अनुसार, जिन व्याख्याताओं को उनकी भर्ती के समय पी. एच. डी. की डिग्री होने के कारण चार अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिला था, वे चयन श्रेणी में रखे जाने पर दो और वेतन वृद्धि के पात्र नहीं होंगे। वे व्याख्याता जिन्होंने अपनी भर्ती के बाद पीएचडी की डिग्री प्राप्त की है, वे चयन ग्रेड में जाने पर दो वेतन वृद्धि के लिए पात्र होंगे। (iii) एक व्याख्याता खंड 6,16 और 6,19 के तहत प्रोत्साहन के लिए एक साथ पात्र नहीं होगा।

ग

7.5.21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के तहत चयन ग्रेड में रखे जाने पर विभिन्न श्रेणियों के व्याख्याताओं के अधिकारों की तुलना 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश से करना आवश्यक है। इसे सारणीबद्ध रूप में नीचे प्रस्तुत किया गया है:

डी.

भर्ती के समय व्याख्याता की योग्यता	21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के तहत अग्रिम वृद्धि की कुल संख्या	29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश के तहत अग्रिम वृद्धि की कुल संख्या
एक व्याख्याता, जिसके पास भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री हो।	छह अग्रिम वेतनवृद्धि	चार अग्रिम वेतनवृद्धि
एक व्याख्याता जिसने सेवा के दौरान पीएचडी की डिग्री प्राप्त की	चार अग्रिम वेतनवृद्धि	चार अग्रिम वेतनवृद्धि

ई.

च

7.6.जैसा कि उपरोक्त तालिका से उल्लेख किया गया है, एक व्याख्याता जिसके पास भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री होती है, वह चयन श्रेणी में रखे जाने पर छह अग्रिम वेतन वृद्धि का हकदार होता है, जैसा कि 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,16 और 6,18 के तहत निर्धारित किया गया था। हालांकि, 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश के अनुसार, ऐसे व्याख्याता को चयन श्रेणी में रखे जाने पर होने वाली अग्रिम वृद्धि की संख्या घटाकर चार कर दी गई थी। 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश ने व्याख्याताओं की पात्रता को अग्रिम वेतन वृद्धि तक सीमित कर दिया, जो चयन ग्रेड में रखे जाने पर उपार्जित होगी, जिसमें यह प्रावधान किया गया था कि एक शिक्षक जिसे लाभ मिला था।

जी.

एच.

382

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

भर्ती के समय पी. एच. डी. डिग्री होने के कारण अग्रिम वृद्धि, चयन श्रेणी में रखे जाने पर अग्रिम वृद्धि के लिए पात्र नहीं होंगे। चयन ग्रेड में रखे जाने पर वेतनवृद्धि का लाभ उन व्याख्याताओं तक ही सीमित था जिन्होंने अपनी भर्ती के बाद पीएचडी की

डिग्री प्राप्त की थी। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश में 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश में संशोधन किया गया है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह प्रावधान किया गया है कि व्याख्याता इसके खंड 6.16 और 6.19 के तहत प्रोत्साहन के लिए एक साथ पात्र नहीं होंगे। 29 मार्च, 2001 के केरल सरकार के आदेश को पढ़ने पर, यह स्पष्ट है कि शिक्षकों के पास दोनों M.Phil हैं। सेवा में प्रवेश के समय डिग्री और पी. एच. डी. डिग्री चार अग्रिम वेतन वृद्धि के हकदार हैं जो ऊपर निकाले गए 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के अनुसार है। हालाँकि, उपरोक्त सरकारी आदेश के पैराग्राफ 6.16 से 6.18 में निर्दिष्ट प्रोत्साहन एक साथ नहीं दिए जाने हैं। दूसरे शब्दों में, एक शिक्षक पैराग्राफ 6.18 और 6.19 में बताए गए प्रोत्साहनों के लिए एक साथ पात्र नहीं है। इसी तरह, एक शिक्षक पैराग्राफ 6.17 और 6.19 में निर्दिष्ट लाभों के लिए एक साथ पात्र नहीं है। इसका मतलब यह होगा कि 21 दिसंबर, 1999 के आदेश में किया गया यह एकमात्र संशोधन है।

ग

डी.

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि पी. एच. डी. डिग्री रखने वाले व्याख्याता को चार अग्रिम वेतन वृद्धि और M.Phil रखने वाले व्याख्याता को दो अग्रिम वेतन वृद्धि प्रदान करने का उद्देश्य है। व्याख्याता के रूप में भर्ती के समय डिग्री उनके पास उच्च योग्यता की मान्यता में होती है, क्योंकि आमतौर पर एक व्याख्याता के पास व्याख्याता के रूप में भर्ती होने के लिए स्नातकोत्तर की डिग्री होनी चाहिए। इसलिए, यदि किसी व्यक्ति के पास M.Phil है। व्याख्याता के रूप में भर्ती के समय डिग्री, वह दो अग्रिम वेतन वृद्धि का हकदार होगा और यदि किसी व्याख्याता के पास व्याख्याता के रूप में नियुक्ति के समय पीएचडी की डिग्री है, तो चार अग्रिम वेतन वृद्धि स्वीकार्य हैं। इसके विपरीत, दो अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होना जब एक व्याख्याता सेवा/कैरियर के दौरान पीएचडी की डिग्री प्राप्त करता है। दूसरी ओर, यदि कोई M.Phil वाला व्याख्याता है। भर्ती के दो साल के भीतर पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त करने पर एक वेतन वृद्धि की अनुमति होगी। इसके अलावा, पी. एच. डी. डिग्री वाला व्याख्याता चयन ग्रेड व्याख्याता/रीडर के रूप में पदोन्नत होने पर दो अग्रिम वेतन वृद्धि के लिए पात्र होगा।

ई.

च

जी.

वास्तव में, 29 मार्च, 2001 के बाद के राज्य सरकार के आदेश में भी, पैराग्राफ 3 दोहराता है कि दोनों M.Phil रखने वाले शिक्षक हैं। सेवा ए में उनके प्रवेश के समय डिग्री और पीएचडी डिग्री

एच.

383

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

वे चार अग्रिम वेतन वृद्धि के हकदार हैं जो 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के अनुच्छेद 6.16 के बराबर हैं। उक्त आदेश के पैराग्राफ 4 और 6 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पहले के सरकारी आदेश के पैराग्राफ 6.16 से 6.18 और पैराग्राफ 6.18 और 6.19 में निर्दिष्ट प्रोत्साहन एक साथ लागू नहीं होगा। यहां तक कि उक्त आदेश के पैराग्राफ 7 में भी कहा गया है कि शिक्षक पैराग्राफ 6.17 और 6.19 दोनों में एक साथ निर्दिष्ट लाभों के लिए पात्र नहीं है। 8. अगला पहलू जिस पर विचार करने की आवश्यकता है वह यह है कि क्या इस तरह के संशोधन को पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है।, अर्थात्, क्या 29 मार्च, 2001 का सरकारी आदेश इस हद तक कि वह 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश को संशोधित करता है, उन व्याख्याताओं पर लागू होगा जिन्होंने अपनी भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री प्राप्त की थी, जैसे कि प्रतिवादी संख्या 1, जिन्हें 29 मार्च, 2001 से पहले चयन श्रेणी में रखा गया था।

8.1. रमेश प्रसाद वर्मा के अनुसार, यह सामान्य बात है कि कानून की शक्ति वाला कोई भी कानून या साधन, जो स्पष्टीकरणात्मक या व्याख्यात्मक प्रकृति का हो और जिसका उद्देश्य किसी कानून में संदेहों को दूर करना या किसी स्पष्ट चूक को ठीक करना हो, आम तौर पर पूर्वव्यापी होगा। इसलिए, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश को पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है, इस पर विचार करना आवश्यक है कि क्या उक्त आदेश एक स्पष्टीकरण था या एक ठोस संशोधन था।

डी.

ई.

8.2. 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश के पूर्वव्यापी संचालन के रूप में पहलू से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए न्यायमूर्ति जी. पी. सिंह द्वारा एक स्पष्टीकरणात्मक/घोषणात्मक/व्याख्यात्मक प्रावधान के विस्तार पर ग्रंथ, सांविधिक व्याख्या के सिद्धांत, 11 वें संस्करण (2008) से निम्नलिखित उद्धरण का उल्लेख करना उपयोगी हो सकता है:

च

“पूर्वव्यापी संचालन के खिलाफ धारणा घोषणात्मक कानूनों पर लागू नहीं होती है। जैसा कि क्रेज़ में कहा गया है और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अनुमोदित है: आधुनिक उद्देश्यों के लिए एक घोषणात्मक अधिनियम को सामान्य कानून, या किसी भी कानून के अर्थ या प्रभाव के बारे में मौजूद संदेहों को दूर करने के लिए एक अधिनियम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस तरह के कृत्यों को आमतौर पर पूर्वव्यापी माना जाता है।

जी.

[...] एक व्याख्यात्मक अधिनियम आम तौर पर एक स्पष्ट चूक प्रदान करने या पिछले अधिनियम के अर्थ के बारे में संदेह को दूर करने के लिए पारित किया जाता है। यह अच्छी तरह से तय किया गया है कि यदि कोई कानून पिछले कानून का उपचारात्मक या केवल घोषणात्मक है, तो पूर्वव्यापी संचालन आम तौर पर होता है।

एच.

384

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

इरादा था। भाषा 'का हमेशा अर्थ माना जाएगा' या 'कभी शामिल नहीं की गई मानी जाएगी' घोषणात्मक है और सादे शब्दों में पूर्वव्यापी है। यह इंगित करने वाले स्पष्ट शब्दों के अभाव में कि संशोधन अधिनियम घोषणात्मक है, इसका इतना अर्थ नहीं लगाया जाएगा जब संशोधित प्रावधान स्पष्ट और असंदिग्ध था। एक संशोधन अधिनियम मूल अधिनियम के एक प्रावधान का अर्थ स्पष्ट करने के लिए विशुद्ध रूप से स्पष्टीकरणात्मक हो सकता है जो पहले से ही निहित था। इस प्रकार के स्पष्टीकरणात्मक संशोधन का पूर्वव्यापी प्रभाव होगा और इसलिए, यदि संविधान के लागू होने पर मूल अधिनियम मौजूदा कानून था, तो संशोधन अधिनियम भी मौजूदा कानून का हिस्सा होगा।”

ग

[हम पर जोर दें]

8.3. यह न्यायालय आयकर आयुक्त, बॉम्बे बनाम। पोदार सीमेंट प्राइवेट लिमिटेड, (1997) 226 आई. टी. आर. 625 (एस. सी.) ने उल्लेख किया कि

जिन परिस्थितियों के तहत एक संशोधन या संशोधन पेश किया गया था और इसके परिणामों को इस मुद्दे को तय करते समय ध्यान में रखना होगा कि क्या संशोधन अपनी प्रकृति में स्पष्टीकरणात्मक या मूल था और क्या इसका पूर्वव्यापी प्रभाव होगा या नहीं।

डी.

8.4. एलाइड मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम आयकर आयुक्त, दिल्ली, (1997) 224 आई. टी. आर. 677 (एस. सी.), इस न्यायालय ने पाया कि

ई.

संसद द्वारा अधिनियमित एक प्रावधान से अनपेक्षित परिणाम सामने आए। एक स्पष्ट चूक थी। दोष को ठीक करने के लिए, एक संशोधन के माध्यम से एक परंतुक पेश करने की मांग की गई थी। न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि यदि यह अधिनियम के स्पष्ट उद्देश्य और उद्देश्य को पराजित करता है तो शाब्दिक निर्माण से बचा जा सकता है। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि यदि संशोधन को प्रासंगिक प्रावधान में पूर्वव्यापी रूप से नहीं पढ़ा जाता है, तो उक्त प्रावधान की यथोचित व्याख्या करना असंभव होगा। कि चूंकि प्रावधान में एक स्पष्ट चूक थी, इसलिए एक संशोधन की आवश्यकता थी जो कानून को पूर्वव्यापी रूप से स्पष्ट/घोषित करेगा।

च

9. कानून का यह प्रस्ताव कि एक स्पष्टीकरणात्मक प्रावधान को पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है, इतनी अच्छी तरह से स्थापित है कि हम उसी तरीके से निर्णयों का उल्लेख करके इस निर्णय पर बोझ नहीं डालना चाहते हैं। हालाँकि, किसी कानून के लिए स्पष्टीकरण/स्पष्टीकरण की भूमिका पर विस्तार करना आवश्यक है और इसे कैसे पहचाना जा सकता है और एक मूल संशोधन से अलग किया जा सकता है।

जी.

एच.

385

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.] ए.

क.

9.1. एक स्पष्टीकरण/स्पष्टीकरण दायरे का विस्तार या परिवर्तन नहीं कर सकता है।

मूल प्रावधान का, बिहटा सहकारी विकास बेंट विपणन संघ लिमिटेड बनाम बैंक ऑफ बिहार, ए. आई. आर. 1967 एस. सी. 389. बस।

किसी प्रावधान को "स्पष्टीकरण" या "स्पष्टीकरण" के रूप में वर्णित करना उसके सही अर्थ और महत्व के बारे में निर्णायक नहीं है। इस पहलू पर, इस न्यायालय में

वर्चुअल सॉफ्ट सिस्टम्स लिमिटेड बनाम आयकर आयुक्त, दिल्ली, (2007) 289 आई. टी. आर. 83 (एस. सी.) ने निम्नलिखित टिप्पणी की:

“भले ही कानून में इस आशय का बयान हो कि संशोधन घोषणात्मक या स्पष्टीकरणात्मक है, लेकिन यह मामले का अंत नहीं है। न्यायालय स्वयं को कानून में उक्त कथन से बंधा हुआ नहीं मानेगा, लेकिन संशोधन की प्रकृति का विश्लेषण करने के लिए आगे बढ़ेगा और फिर यह निष्कर्ष निकालेगा कि क्या यह वास्तव में एक स्पष्टीकरणात्मक या घोषणात्मक प्रावधान है या क्या यह एक संशोधन है जिसका उद्देश्य कानून को बदलना है और जो भविष्य की अवधियों पर लागू होता है।”

ग

कानून की इस स्थिति को संघ में भी सदस्यता दी गई है

डी.

इंडिया बनाम मार्टिन लॉटरी एजेंसीज लिमिटेड, (2009) 12 एस. सी. सी. 209 जिसमें

यह कहा गया था कि जब कर की एक नई अवधारणा पेश की जाती है ताकि जाल का विस्तार किया जा सके, तो इसे केवल स्पष्टीकरणात्मक या घोषणात्मक नहीं कहा जा सकता है और इसलिए इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है, भले ही इस तरह के कर को मौजूदा प्रावधान के स्पष्टीकरण के रूप में पेश किया गया था। यह आगे कहा गया कि भले ही एक स्पष्टीकरण "संदेह को दूर करने के लिए" अभिव्यक्ति के साथ शुरू होता है, जब तक कि स्पष्टीकरण की शुरुआत से पहले कानून में कोई अस्पष्टता या अस्पष्टता नहीं थी, तब तक स्पष्टीकरण को यह कहकर पूर्वव्यापी रूप से लागू नहीं किया जा सकता था कि यह केवल स्पष्टीकरणात्मक था।

ई.

9.2. उपरोक्त अधिकारियों से निम्नलिखित सिद्धांतों को निकाला जा सकता है:

च

i) यदि कोई कानून पूर्ववर्ती कानून का उपचारात्मक या केवल स्पष्टीकरणात्मक है, तो उसके पूर्वव्यापी संचालन की अनुमति दी जा सकती है। (ii) बाद के आदेश/प्रावधान/संशोधन को पिछले कानून का स्पष्टीकरण माना जाए, इसके लिए पूर्व-संशोधित कानून अस्पष्ट या अस्पष्ट होना चाहिए था। यह केवल तभी होता है जब किसी प्रावधान की यथोचित व्याख्या करना असंभव होता है जब तक कि इसमें कोई संशोधन नहीं पढ़ा जाता है, तो संशोधन को पिछले कानून का स्पष्टीकरण या घोषणा माना जाता है और इसलिए इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जाता है।

जी.

एच.

386

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

iii) एक स्पष्टीकरण/स्पष्टीकरण मूल प्रावधान के दायरे का विस्तार या परिवर्तन नहीं कर सकता है।

(iv) केवल इसलिए कि किसी प्रावधान को स्पष्टीकरण/स्पष्टीकरण के रूप में वर्णित किया गया है, न्यायालय को कानून में ही उक्त कथन से बाध्य नहीं होना चाहिए, लेकिन संशोधन की प्रकृति का विश्लेषण करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए और फिर यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि क्या यह वास्तव में एक स्पष्टीकरणात्मक या घोषणात्मक प्रावधान है या क्या यह एक मूल संशोधन है जिसका उद्देश्य कानून को बदलना है और जो संभावित रूप से लागू होगा।

10. वर्तमान मामले के तथ्यों पर ऊपर चर्चा किए गए कानून को लागू करते हुए, हमारा विचार है कि 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश को स्पष्टीकरण के रूप में घोषित नहीं किया जा सकता है और इसलिए इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू किया जा सकता है। उक्त आदेश ने 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश को इस हद तक संशोधित किया है कि जिन शिक्षकों को पहले ही पी. एच. डी. की डिग्री के लिए अग्रिम वेतन वृद्धि का लाभ मिल चुका है, वे चयन श्रेणी में अपनी नियुक्ति के समय अग्रिम वेतन वृद्धि के पात्र नहीं होंगे। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, कानून में प्रावधान है कि एक स्पष्टीकरण का किसी भी पक्ष को अप्रत्याशित बोझ से पीड़ित करने या किसी भी पक्ष से प्रत्याशित लाभ वापस लेने का प्रभाव नहीं होना चाहिए। हालांकि, 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश ने चयन ग्रेड में नियुक्ति के समय अग्रिम वृद्धि के लिए व्याख्याताओं की पात्रता को सीमित कर दिया है, केवल उन लोगों के लिए जिनके पास भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री नहीं है और बाद में वे इसे प्राप्त करते हैं।

ग

डी.

ई.

10.1. विचाराधीन प्रोत्साहनों का उद्देश्य दो गुना प्रतीत होता है: पहला, व्याख्याताओं के पद के लिए आवेदन करने के लिए उन्नत शैक्षिक योग्यता वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहित करना। दूसरा, शिक्षण पेशे में बने रहने के लिए, उन्नत योग्यता वाले व्यक्ति। वनहीन उद्देश्यों में से पहले को सुरक्षित करने के लिए, 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश के खंड 6,16 में भर्ती पर उपार्जित वेतन वृद्धि का प्रावधान किया गया था। उपर्युक्त उद्देश्यों में से दूसरे को सुरक्षित करने के लिए, इसके खंड 6,19 में उन प्रोत्साहनों का प्रावधान किया गया है जो चयन श्रेणी में नियुक्ति के समय प्राप्त होंगे। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता कि 21 दिसंबर, 1999 को आदेश जारी करते समय सरकार का मूल इरादा यह था कि एक व्याख्याता खंड 6,16 और 6,19 के तहत प्रोत्साहन के लिए एक साथ पात्र नहीं होगा।

च

जी.

10.2. इसके अलावा, जैसा कि ऊपर प्रस्तुत सारणीबद्ध तुलना से स्पष्ट है, ए में अर्जित होने वाली अग्रिम वृद्धि की संख्या एच.

387

श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय संस्कृत और ओआरएस. v. डॉ. मनु और ए. एन. आर. [नागरत्ना, जे.]

एक ऐसे व्याख्याता का पक्ष, जिसके पास भर्ती के समय पीएचडी की डिग्री है, 29 मार्च, 2001 के सरकारी आदेश के माध्यम से छह से घटाकर चार कर दिया गया था। इसलिए, उक्त आदेश के पूर्वव्यापी आवेदन की अनुमति देने के परिणामस्वरूप उन व्याख्याताओं के निहित अधिकार वापस ले लिए जाएंगे जिनके पास अपनी भर्ती के समय पीएचडी थी और जिन्हें चार प्लस दो अग्रिम वृद्धि के साथ 29 मार्च, 2001 से पहले चयन ग्रेड में रखा गया था।

10.3. इसके अलावा, केवल इसलिए कि बाद के सरकारी आदेश को स्पष्टीकरण/स्पष्टीकरण के रूप में वर्णित किया गया है या कहा जाता है कि उस संबंध में मांगे गए स्पष्टीकरण के बाद जारी किया गया है, न्यायालय यह स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है कि उक्त आदेश केवल स्पष्टीकरणात्मक प्रकृति का है। 29 मार्च, 2001 के बाद के सरकारी आदेश की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्य के विश्लेषण पर, हमारा विचार है कि यह केवल स्पष्टीकरणात्मक नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण संशोधन है जो एक निश्चित श्रेणी के व्याख्याताओं के पक्ष में दो अग्रिम वृद्धि के लाभ को वापस लेने का प्रयास करता है। पहले से मौजूद योजना के तहत वापस लिए गए लाभ का अनुमान नहीं था। इसलिए इस तरह के संशोधन को पूर्वव्यापी प्रभाव नहीं दिया जा सकता है।

ग

डी.

11. ऊपर बताए गए कारणों से, प्रतिवादी संख्या 1 जैसे व्याख्याता जिन्हें 29 मार्च, 2001 से पहले चयन श्रेणी में रखा गया था, वे 21 दिसंबर, 1999 के सरकारी आदेश में निर्धारित सभी प्रोत्साहनों के हकदार होंगे।

ई.

12. वर्तमान याचिका खारिज कर दी जाती है। केरल उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश और खंड पीठ के क्रमशः 13 अक्टूबर, 2015 और 10 अगस्त, 2016 के निर्णयों की पुष्टि की गई है।

दल अपन-अपन लागत वहन करत।

च

दिव्या पांडे

याचिका खारिज की जाती है।

(सहायक: रूपांशी विरंग, एलसीआरए)

जी.

एच.